

विचार बिन्दु

अतिथि जिसका अन्न खाता है, उसके पाप धुल जाते हैं। -अथर्ववेद

आहार औषधि है

आर्यकता पढ़ने पर आहार भी औषधि हो जाता है। प्राचीन भारत के महर्षि-वैज्ञानिक और शल्यचिकित्सा के जनक आचार्य सुश्रुत ने स्वस्थवृत्त अर्थात् भोजन के 12 प्रकारों का सुन्दर वर्णन किया है। हालांकि आचार्य ने इस वर्गीकरण में किन सिद्धांतों का प्रयोग किया, इसका कोई स्पष्ट विवरण नहीं दिया है। तथापि, इस वर्गीकरण की आधुनिक वैज्ञानिक सन्दर्भों के साथ गहनता से पड़ताल करने पर तीन बातें दृष्टिगोचर हो रही हैं। पहली बात यह है कि यहाँ आहार के माध्यम से धातु और दोष वैषम्य को समझाने का मार्ग दर्शित है। दूसरी बात यह है कि इस वर्गीकरण में स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा और आतुर के विकार-प्रशमन का उद्देश्य भी साधा गया है। तीसरी बात यह है कि इस वर्गीकरण में चार सिद्धांतों के एक साथ दर्शन होते हैं। प्रथम स्तर पर खाद्य पदार्थों की प्रकृति, विशेषकर रस और गुण को आधार माना गया है। दूसरे स्तर पर आहार का उपयोग करने वाले व्यक्ति की प्रकृति (वात, पित्त व कफ) को ध्यान में रखा गया है। तीसरे स्तर पर देश, काल, वातावरण के साथ ही मात्रा और योग, विशेषकर आहार-औषधि योग, को संज्ञा दी गई है। और अंततः भोजन और व्यक्ति के मध्य रिश्ते को सामान्य-विशेष का सिद्धांत के अनुसार सहेजते हुये स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा और आतुर के विकारों का प्रशमन भी ध्यान में रखा गया है। यह एक ऐसी अद्भुत व्यवस्था है, जिसका कोई सानो नहीं है। इस दिग्गज-युगमय सृष्टि के क्लिनिकल और स्वास्थ्य विषयक महत्त्व पर एक नवीन दृष्टिकोण आज की चर्चा का प्रमुख विषय है।

रोजमर्रा के उपयोग की दृष्टि से देखें तो इस चर्चा में कई प्रश्नों के उत्तर मिलेंगे: क्या खाये, क्या न खाये और क्यों? सदैव स्वस्थ रहने में किस प्रकार का आहार मदद कर सकता है? रोगी और स्वस्थ व्यक्ति के आहार में क्या अंतर होता है? इन सबका उत्तर भी इस चर्चा में मिलेगा। भोजन अनेक प्रकारों से वर्गीकृत किया जाता है। यह वर्गीकरण इस बात पर निर्भर करता है कि हम भोजन को किस उद्देश्य की पूर्ति हेतु विचार कर रहे हैं। इनमें एक वर्गीकरण आहार को शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष, द्रव, शुष्क, एककालिक, द्विकालिक, औषधयुक्त, मात्राहीन, प्रशमनकारक और वृत्तिप्रयोजक में बाँटा है। आइये इनको समझते हैं।

शीत आहार उन लोगों को लेना ठीक रहता है जो प्यास, उष्णता, मद या दाह से पीड़ित हों। रक्त पित्त के रोगी, विषाक्त पदार्थ खा लेने वाले या मूर्च्छा से पीड़ित और बहुत ज्यादा सहवास से कमजोरी महसूस करने वाले लोगों के लिये शीतवीर्य पदार्थों का सेवन लाभकारी होता है। पुराने शालि चावल, साठी चावल, गेहूँ, मूँग की दाल, दूध, संतरा, मौसम्बी, सेब, आंवले का मुरब्बा, केला, चीकू, अनार, अंगूर व किशमिश भी उत्तम हैं। औषधियों में देखें तो शतावरी, मूसली, आमलकी, गिलोय, अष्टवर्ग व जीवनीयगण की औषधियाँ, सुक्ता, प्रवाल, शुक्ति, अकीक आदि की पिष्टी भी शीतवीर्य में श्रेष्ठ हैं। ध्यान दीजिये शीत का मतलब ठंडा या बासी नहीं बल्कि ठंडे स्वभाव वाले पदार्थ हैं।

उष्ण आहार कफ या वात रोगों से पीड़ित, विरेचन या स्नेहपान लिये हुये लोग तथा जिनका शरीर क्लेद-रहित हो, उन्हें उष्णवीर्य खाद्य, पेय और औषधियाँ उपयोगी रहती हैं। इनमें बाजरा, मकई, गेहूँ, चना, उड़द, तुअर या अरहर की दाल, मोठ की दाल, कुलथ, मांसाहार, भैंस का दुग्ध, गुड़, राव, शहद, आम, ककड़ी, छुहारा, मुनक्का, बादाम, अखरोट, चिलगोजा, नारियल की गिरी, तिल, मूँगफली आदि मुख्य हैं। औषधियों में त्रिकटु (सोंठ, काली मिर्च, पिपली), पंचकोल (पिपली, पिपरमूल, चव्य, चित्रक व सोंठ), दशमूल के द्रव्य, अश्वगंधा, बैंगन, आलू, रतातु, सभी आसव एवं अरिष्ट, रस-भस्म आदि उष्णवीर्य हैं। इसके साथ ही उष्ण अर्थात् ताजा बना हुआ भोजन भी लाभदायक है। उष्ण भोजन स्वादिष्ट, अग्निदीपक, जल्दी पचने वाला, वात का अनुलोमक व कफ नाशक होता है। स्निग्ध और उष्ण भोजन शरीर के बल तथा अग्नि को बढ़ाता है।

स्निग्ध आहार वात प्रकृति वाले तथा वात रोग से पीड़ित, रूक्ष शरीर वाले, सहवास से दुर्बल और व्यायाम करने वाले लोगों के लिये ठीक रहता है। इनमें स्वभाव से स्निग्ध खाद्य व पेय में गेहूँ, ज्वार, उड़द, दूध, घी, तेल, वसा, मज्जा, मांसरस, बादाम, नारियल की गिरी, तिल, मूँगफली आदि हैं। ध्यान दीजिये, वसा से शरीर में उष्णता व ताकत तो मिलती है पर निरंतर ज्यादा लेने से शरीर में मेद एकत्र होने लगता है। एक बात यह भी ध्यान देना चाहिये कि डालडा स्निग्ध होते हुये भी भारी हानिकारक है। घी उत्तम रसायन है और आयुष्य या आयु को बढ़ाने वाला है। घी विविध प्रकार के पदार्थों से मिलकर योगवाही का कार्य, अर्थात् अपने गुणों को यथावत रखते हुये अन्य पदार्थ के गुणों को भी वहन करता है। गाय का घी त्रिदोष-शामक है।

कई लोग दवाओं से द्वेष करते हैं या लेने की इच्छा नहीं करते। ऐसे लोग औषध-युक्त आहार ले सकते हैं। इसी प्रकार ऋतुचर्या के अनुरूप लिया जाने वाला आहार भी दोष दूर करता है। आवश्यकता पड़ने पर आहार भी औषधि हो जाता है। सही भोजन न होने से हम बीमार होने लगते हैं।

सुखपूर्वक आसानी से पचता है। ध्यान दीजिये, ऐसे लोग जिनके शरीर में तरल पदार्थों की अधिकता हो उन्हें अधिक मात्रा में तरल पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिये। शुष्क भोजन उन लोगों के लिये उपयोगी है जिनका शरीर कुष्ठ व विषपं जैसे रोगों के कारण गीला या चिपचिपा रहता हो। घाव वाले शरीर और प्रमेह के रोगियों के लिये भी शुष्क आहार उपयोगी है। शुष्क भोजन से तात्पर्य केवल घी, तेल आदि स्नेह-पदार्थों से रहित होना पर नहीं बल्कि ऐसे अन्न भी हैं जो स्वयं स्निग्ध, मधुर और तरल न हों। ऐसे पदार्थों में चना, जौ, मोठ, बाजरा, कोदो आदि प्रमुख हैं।

एककालिक आहार को आम बोलचाल में एक जून की रोटी और दो जून की रोटी के नाम से जाना जाता है। एक जून की रोटी उन लोगों के लिये उत्तम है जिनकी पाचशक्ति कमजोर है। इससे दुर्बल पाचकान्ति की वृद्धि होती है। जिन लोगों की अग्नि सम है, उनके लिये दोनों समय का भोजन ठीक है। प्रायः अनेक प्रकार के रोगों या कफ की अधिकता से अग्नि मन्द हो जाती है। वात, पित्त और कफ के सम रहने पर पाचकान्ति भी समान रहती है। ध्यान दीजिये, बात यह भी है कि मन्दाग्नि सब रोगों की जड़ है। अतः एककालिक भोजन द्वारा अग्नि सम करना आवश्यक है। किन्तु समागिन वाले व्यक्ति को दोनों समय का मात्रापूर्वक भोजन न मिले तो पाचकान्ति ही शरीर की धातुओं का विनाश करने लगती है। स्वस्थ व्यक्ति को जरूरत से कम मात्रा में दिया गया भोजन मात्राहीन-भोजन है। स्वस्थ व्यक्ति यदि हीन मात्रा में भोजन लेता है तो उसके बल, वर्ण और शरीर वृद्धि के लिये हानिकारक है।

अभी तक हमने देखा कि आहार ही औषधि का कार्य कर सकता है। कभी कभी औषध-युक्त आहार और मात्राहीन या जरूरत से कम आहार भी लेना पड़ता है। कई लोग दवाओं से द्वेष करते हैं या लेने की इच्छा नहीं करते। ऐसे लोग औषध-युक्त आहार ले सकते हैं। हीन मात्रा में आहार तो मन्दाग्नि वाले या रोगी व्यक्ति के लिये ठीक रहता है, परन्तु स्वस्थ व्यक्ति के लिये नहीं। मन्दाग्नि की स्थिति सुधरने के बाद मात्रापूर्वक भोजन करना ही उचित है। यहाँ मात्रापूर्वक भोजन से तात्पर्य व्यक्ति विशेष के अग्निबल या पचा जाने की ताकत के अनुसार होती है। इसी प्रकार ऋतुचर्या के अनुरूप लिया जाने वाला आहार भी दोष दूर करता है।

उपरोक्त ग्यारह प्रकार के आहार के अलावा जिस व्यक्ति के दोष, अग्नि, धातु, और मल-त्याग सन्तुलित हों, इन्द्रियाँ, आत्मा एवं मन प्रसन्न हो, ऐसे स्वस्थ व्यक्ति को स्वस्थ बने रहने के लिये अग्नि बल को देखते हुये मात्रापूर्वक सभी प्रकार का भोजन लेना उचित रहता है।

उपरोक्त पूरी चर्चा के सूत्र हैं (देखें, सु.उ.64.56-66): अत ऊर्ध्वं द्वादशशानप्रविचारान् वक्ष्यामः। तत्र शीतोष्णस्निग्धरूक्षद्रव शुष्कैककालिक द्विकालिकौषध युक्त मात्राहीन दोषप्रशमनवृत्त्यर्थाः॥ तुष्णोष्णमददाहार्तान् रक्तपित्तविषातुरान्। मूर्च्छातान् स्त्रीषु च शीणान् शीतैर्रेषुपाचरेत्॥ कफवातामयाविष्टान् विरिक्तान् स्नेहपायिनः। अक्लिन्नकायांश्च नरान्पौलैरुपाचरेत्॥ वातिकान् रूक्षदेहांश्च व्यावायोपहतास्तथा। व्यायामिनश्चापि नरान् स्निग्धैर्रेषुपाचरेत्॥ मेदसाऽभिपरीतास्तु स्निग्धान्मेहातुरानपि। कफापिष्यदेहांश्च रूक्षैरैरुपाचरेत्॥ शुष्कदेहान् पिपासार्तान् दुर्बलानपि च द्रवैः। प्रक्लिन्नकायान् क्षणिनः शुष्कैर्महिन एव च। एककालं भवेदेषो दुर्बलानिक्लिवृद्धये। समागनये तथाऽस्यो द्विकालमपि पूजितः॥ औषधद्वेषिणे देयस्तथौषधसमायुतः। मन्दाग्नये रोगिणे च मात्राहीनः प्रशस्यते। यत्पुत्रदत्तस्वाहारे दोषप्रशमनः स्मृतः। अतः परं तु स्वस्थानां वृत्त्यर्थं सर्व एव च। प्रविचारानिमानेवं द्वादशशान् प्रयोजयेत्॥

इस चर्चा का हमारे लिये महत्त्व क्या है? वस्तुतः व्यक्ति व पर्यावरण के रिश्ते आहार को औषधि बनाते हैं। इस रिश्ते में गड़बड़ी होते ही हम स्वस्थ होने की बजाय और बीमार होने लगते हैं। यहाँ वर्णित बातों का उपयोग आप स्वस्थ रहने के लिये कर सकते हैं। दूसरी बात यह है कि यह चर्चा आहार के केवल एक पहलू पर ही है। आहार के विविध पहलुओं पर आगे भी चर्चा होगी, जिन्हें ध्यान रखना आवश्यक है। तीसरी बात यह है कि स्वस्थ रहने के लिये आहार अति महत्वपूर्ण घटक है किन्तु अकेले आहार समझाने से स्वास्थ्य नहीं समझल जाता। सदैव स्वस्थ रहने के लिये आहार, विहार, सद्बुत, स्वस्थवृत्त, पंचमर्क, रसायन व वाजीकरण और अंततः औषधि जैसे सभी रक्षा-कवच महत्वपूर्ण हैं। इस चर्चा में जो भी औषधि योग आये हैं, उन्हें स्वयं वैद्य बनते हुये सेल्फ-मेडिकेशन नहीं करना चाहिये। इन सब पर आपको अपने आयुर्वेदाचार्य से निरंतर परामर्श लेते रहना आवश्यक है।

-अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

कंटीले फूल

- नई दिल्ली: आप पार्टी का एक विधायक गिरफ्तार, एक ने किया सरेन्द्र। आप तो ऐसे न थे, आपकी नीतियाँ ऐसी न थीं। सत्ता क्या मिल गई, आप आपा खोकर ऐसे बन गए।
- प्रधानमंत्री विधायकों को भूत का डर सताया। समाज के भूत-प्रेतों का पाठ पढ़ाने वाले खुद इसका पाठ पढ़ने लग गये हैं।
- कल्याणकारी बजट घोषणाओं के लिए सीएम का आभार जताया।

- दूसरी तरफ बजट में वकीलों को सुविधाएं न देने पर सीएम का पुतला जलाया।
- शिक्षकों की तबादला नीति पर डोटासरा ने सरकार को घेरा। कई मामलों में तो सरकार अड़ी बैठी है वो अड़ी भी ऐसी है कि 3 सीटों में हार क्या सारी सीटें भी चली जाये तो कोई कम नहीं होगा।
- 'मछली' पर फिल्म बनी। अब सात समंदर पार भी 70 एमएम पर्दे पर मछली को देख लोग याद करेंगे।

सागवाड़ा के बटरफ्लाई फेस्टिवल में नौनिहालों ने देखा तितलियों का संसार

इंगूरपुर, (निर्स)। राजस्थान में अपने तरह के पहले 'बटरफ्लाई फेस्टिवल-2018' में पण्ड मुख्यालय के विद्यालयों के 300 से अधिक नौनिहाल तितलियों के रंगीन संसार से रूबरू हुये। वागड नेचर क्लब तथा राजपूताना नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी, भरतपुर के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को लगे इस फेस्टिवल में अहमदाबाद की तितली विशेषज्ञ डॉ. प्रतीक्षा पटेल, 'राजपूताना नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी, भरतपुर' के डॉ. एस.पी.मेहरा, डाक टिकट संग्रहकर्ता पुष्पा खमेसरा, बांसवाड़ा के सहायक निदेशक (जनसंपर्क) कमलेश शर्मा, वाईल्ड लाईफ फोटोग्राफर दिनेश जैन आदि बतौर अतिथि मंचासीन थे।

इस अवसर पर वाईल्ड लाईफ फोटोग्राफर्स दिनेश जैन, नेहा मनोहर द्वारा क्लिक किए गए वागड अंचल में पाई जाने वाली तितलियों की 300 की प्रदर्शनी लगाई गई। साथ ही 300 नौनिहालों को बटरफ्लाई की साईटिंग कराई गई। वहीं सात बटरफ्लाई के जीवनचक्र का लाईव डेमो भी प्रदर्शित किया। इस दौरान राजस्थान में पाई जाने वाली तितलियों पर आधारित एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 'राजपूताना नेचुरल



सागवाड़ा के बटरफ्लाई फेस्टिवल के दौरान बालिकाओं ने वागड में पाई जाने वाली तितलियों की प्रदर्शनी को करीब से देखा

हिस्ट्री सोसायटी, भरतपुर' के डॉ. एस.पी. मेहरा, अहमदाबाद की तितली विशेषज्ञ प्रतीक्षा पटेल, इसरो से आए शोधार्थी ध्रुवल भावसार व सागवाड़ा के मुकेश पंवार द्वारा प्रस्तुत किया गया था।

फेस्टिवल में डाक टिकट संग्रहकर्ता पुष्पा खमेसरा द्वारा तितलियों पर दुनियाभर के 74 देशों द्वारा तितलियों पर जारी किए गए 450 से अधिक डाक टिकटों की एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था।

तितली विशेषज्ञ मुकेश पंवार ने बताया कि फेस्टिवल में टावनी कोस्टर, टीनी ग्रास ब्लू, इण्डियन स्कीपर, जेन्ना ब्लू, कॉमन ग्रास यलो, स्पॉटलेस ग्रास यलो, लेसर ग्रास ब्लू, डाक ग्रास ब्लू, कॉमन इमीग्रेंट,



- तितलियों पर जारी डाक टिकटों की लगी प्रदर्शनी
- वागड की तितलियों की नौनिहालों को साईटिंग कराई गई

मोटल्ड इमीग्रेंट, लाईम, कॉमन रोज, प्लेन टाईगर, ब्लू पन्सी, ग्रे पन्सी, पिपेरोट, ग्राम ब्लू, फॉरेट मो नोट आदि प्रजातियों की तितलियों को बच्चों को दिखाया।

उप वन संरक्षक डॉ. एस.सार्थ बबू ने कहा कि जिला मुख्यालय पर भी एक ऐसे सेंटर का निर्माण किया जाए जहां पर बच्चों को वर्ष के अन्य दिनों में भी बर्ड फेस्टिवल और बटरफ्लाई फेस्टिवल की भांति पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा दी जा सके। उन्होंने इसके लिए इंगूरपुर के गोकुलपुर में जमीन को आरक्षित करने तथा इसके लिए राज्य सरकार को प्रस्ताव भेजने की भी बात कही।

सवाईमाधोपुर शिल्पग्राम देख पर्यटक अभिभूत



सवाई माधोपुर में जर्मनी के पर्यटक दल ने शनिवार को शिल्पग्राम का भ्रमण किया।

सवाई माधोपुर, (निर्स)। जर्मनी से ऑस्ट्रेलिया तक बाइक पर विश्व भ्रमण पर निकले हुए छत्तीस विदेशी पर्यटकों के समूहों ने शनिवार को सवाई माधोपुर के शिल्पग्राम का भ्रमण किया। विदेशी पर्यटकों का समूह शिल्पग्राम की सुन्दरता देखकर अभिभूत हो गया। इस समूह ने शिल्पग्राम में प्रदर्शित कलात्मक हैण्डक्राफ्ट की प्रशंसा की।

पर्यटन विभाग के सहायक निदेशक



- जर्मनी से ऑस्ट्रेलिया तक बाइक भ्रमण पर निकले पर्यटक

मधुसूदन सिंह ने बताया कि यह समूह हमारे आग्रह पर शिल्पग्राम परिसर में उनकी खास बस में रुकते को तैयार हुआ

है। जहां वो यहां के लोकल आर्टिजन के साथ में चर्चा कर सकेंगे। पर्यटकों के इस समूह ने शनिवार को ही रणथम्भोर अभयारण्य में टाइगर सफारी की। सभी 36 पर्यटक टाइगर सफारी के बाद प्रसन्न नजर आ रहे थे। पर्यटकों ने यहां के लोकल आर्टिजन से बात की तथा उनको यहां के लोगों का आतिथ्य स्वीकार बहुत अच्छा लगा। पर्यटकों का यह समूह रविवार को भरतपुर के लिए रवाना हो जाएगा।

ज़नवाणी

सच्चाई स्वीकार करना सबके बस की बात नहीं होती

हाल ही हुए विधानसभा व लोकसभा के उप चुनाव में सत्ता पक्ष भारतीय जनता पार्टी की जो दुर्दर्शा हुई है वैसी पहले कभी नहीं रही। कुछ जानकार कहते हैं कि यदि संपूर्ण प्रदेश में अभी चुनाव होते हैं तो भाजपा का पूरे प्रदेश में यही हाल होता। आखिर इतनी बड़ी पराजय के क्या कारण हो सकते हैं? हारना कोई बड़ी बात नहीं, पर इस तरह से हारना तो वाकई सत्ता पार्टी के लिए घोर चिंता का विषय होना चाहिए।

सच्चाई स्वीकार करना सबके वश की बात नहीं होती। पर अब हार की समीक्षा सही तौर पर करनी चाहिए। मूल्यंकन के साथ-साथ अपने कार्य व्यवहार व योजना निर्माण व क्रियान्वयन हेतु स्वयं को नहीं बदला जायेगा तब तक कुछ उपलब्ध होने वाला नहीं। स्वयं को बदलने हेतु अपने अहम् को बदलना बेहद जरूरी है।

किये वादों से मुक्त जाना प्रायः हार का सबसे बड़ा कारण होता है। अच्छा हो सत्ता पक्ष व संगठन के महागुण अपना रूख व कार्य व्यवहार में परिवर्तन करें अन्यथा आने वाले चुनावों में इससे भी गंभीर स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। जिससे कोई भी नहीं बचा पायेगा।

-के.जी.मालव, बालदडा-बारां (राज.)

राशिफल



पंडित अनिल शर्मा

रविवार 25 फरवरी, 2018

फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत् 2074, मृगशिरा नक्षत्र, प्रीति योग, तैतिल करण, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-वृश्चिक, बुध-कुम्भ, गुरु-तुला, शुक्र-कुम्भ, शनि-धनु, राहु-कर्क, केतु-मकर राशि में।

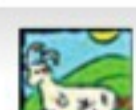
आज मृगशिरा नक्षत्र प्रातः 9:54 तक, प्रीति योग रात्रि 9:43 तक है।

इसके पश्चात आर्द्र नक्षत्र, आयुष्मान योग, गर करण आरम्भ होगा।

आज रविवार संपूर्ण दिन-रात रहेगा। आज नन्द्यांव होली, फागुनदशमी (उड़ीसा) में है।

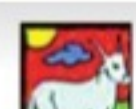
श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:24 से 9:50 तक, लाभ-अमृत 9:50 से 12:40 तक, शुभ 2:05 से 3:31 तक।

राहुकाल: 4:30 से 6:00 तक।



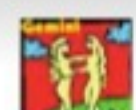
मेघ

नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।



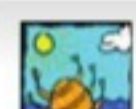
वृष

अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्यों में सार्थक सफलता मिल सकती है। आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बनने लगेंगे।



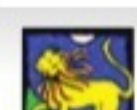
मिथुन

मन:स्थिति ठीक रहेगी। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



कर्क

व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।



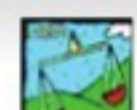
सिंह

घर-परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।



कन्या

अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अतिथियों के आगमन से परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।



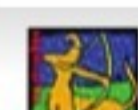
तुला

धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक कार्यों आस्था बढ़ेगी। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा।



वृश्चिक

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।



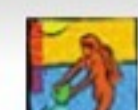
धनु

घर/परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी।



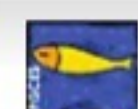
मकर

अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। मित्रों-रिश्तेदारों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।



कुंभ

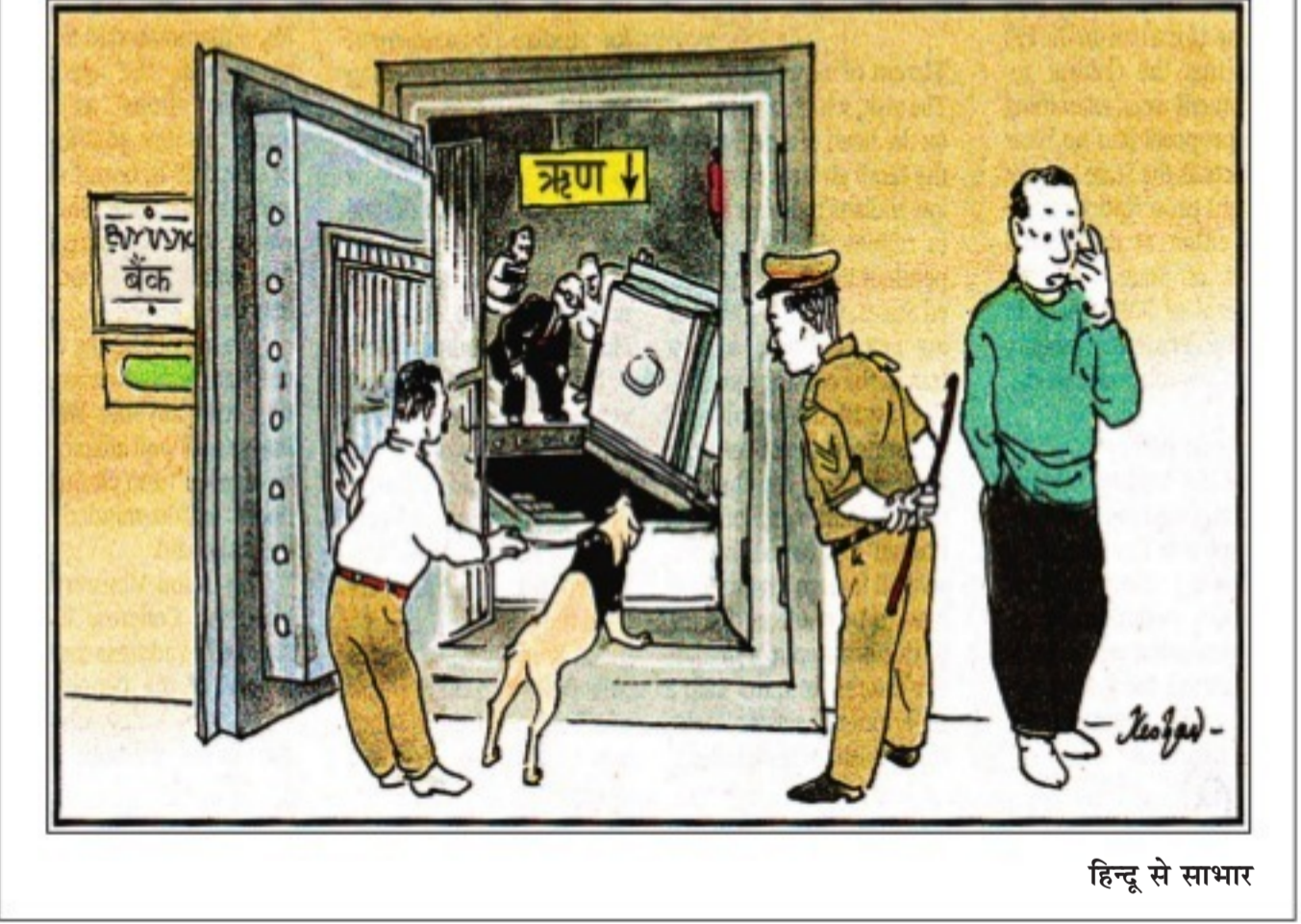
धार्मिक-मांगलिक कार्य में भाग लेने का अवसर मिलेगा। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। आज महत्वपूर्ण कार्यों में सार्थक सफलता मिल सकती है।



मीन

घर/परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। मनोरंजन पर धन खर्च हो सकता है।

कार्टूनी नज़रिया



हिन्दू से साभार